भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT
INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

जनसंदेश टाइम्स

दिनांक : 09.01.2019

ई-कचरा होगा, बहुमूल्य धातुओं का स्रोतः डॉ.कैरोल

आईआईटी

इलेक्ट्रानिक कचरा को शत प्रतिशत उपयोगी बनाने को व्याख्यान

यूजीसी एवं यूनाइटेड किंगडम के ब्रिटिश कौंसिल के संयुक्त आयोजन

आईआईटी बीएचयू के मेटलर्जी विभाग में ई-कचरा पर जानकारी देते प्रो.जैसन और डा.कैरोल

वाराणसी। ई-कचरा बहुमूल्य धातुओं का स्रोत है, हालांकि इन्हे निकालना एक दुरुह कार्य है। इस सन्दर्भ में रसायन मॉडलिंग की उपयोगिता बढ़ जाती है, और इसके माध्यम से इस समस्या को हल किया जाना चाहिए।

यह बातें यूके इंडिया रिसर्च एन्ड एजुकेशन इनिशिएटिव (यूकेआईईआरई) की डा.कैरोल ने कही। उन्होंने मंगलवार को मेटलर्जी विभाग में आयोजित ई-कचरा की जटिलता पर प्रकाश डाला। वह भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) एवं यूनाइटेड किंगडम के ब्रिटिश कौंसिल के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यूके इंडिया रिसर्च एन्ड एजुकेशन इनिशिएटिव (यूकेआईईआरई) योजना के तहत एडिनबरा विश्वविद्यालय, स्कॉटलैंड के दो वैज्ञानिकों प्रो. जैसन एवं डा. कैरोल बीएचयू में थे।

व्याख्यान के अगले चरण में एडिनबरा विश्वविद्यालय के प्रो. जैसन ने शहरी खनन, सर्कलुकर इकॉनामी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा इसके माध्यम से ई-कचरा में उपस्थित लगभग सभी तत्वों को प्राप्तकर पुनः चक्रण (रिसाइकिल) के माध्यम से प्रयुक्त जा सकता है। उदाहरण देते हुए उन्होंने समझाया कि सोने का प्राकृतिक अयस्क एक टन में 1-5 ग्राम सोना दे सकता है। जब कि ई -कचरा की क्षमता 300 ग्राम सोना उत्तपन्न करने की है। विभाग में 'शहरी खनन एवं धातु निष्कर्षण में रसयान विज्ञान का महत्व' विषयक व्याख्यान में बतायी। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभाग के प्रो.टीआर मानखंड ने की। इसके पूर्व शिक्षकों और छात्रों से भरे कांफ्रेंस रूम में अतिथियों को सम्मानित किया। आरंभ में दल भारतीय प्राद्यौगिकी संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का भ्रमण किया।

ई -कचरा के प्रो. कमलेश सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. एन. के. मुखोपाध्याय, प्रो. वकील सिंह, प्रो. आर. के. मंडल, सहित कई प्राद्यापक और दर्जनों विद्यार्थी उपस्थित है।

...ई-कचरे से जूझ रही दुनिया

वाराणसी। ई-कचरे की समस्या से जूझ रहे पूरे विश्व के लिए उपयोगी इको फ्रैंडली अनुसंधान में भारत और यूके साथ हैं। दोनों देशों की संयुक्त योजना है कि इसको शत प्रतिशत उपयोगी रिसाईकल हो टीम रिसाइक्लिंग की 2020 तक नवीन तकनीक विकसित करने वाली है। जो पर्यावरण अनुकूल होने के साथ-साथ न्यूनतम अपशिष्ट उत्पन्न करेगी। जिसको पुनः प्रयोग में लाया जा सके। री प्रोजेक्ट में भारतीय सहयोगी प्रो. कमलेश सिंह ने प्रोजेक्ट की जानकारी देते हुए बताया कि इसके माध्यम से भारत तथा यूनाइटेड किंगडम दोनों देशों के लिए समान रूप से उपयोगी है। साथ ही सन 2020 में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित करने की योजना है। जिसमें इस अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों को ई-कचरा के निस्तारण में संलग्न कंपनियों एवं अनुसंधान कर्ताओं को एक मंच प्रदान करें।